

हीटवेव एक अधसूचति आपदा के रूप में

प्रलम्बिस के लयि:

हीटवेव, भारतीय मौसम वजिज्ञान वभिग (IMD), ग्लोबल वारमगि(वैश्वकि तापन), नगरीय ऊषमा द्वीप, राष्टरीय आपदा प्रबंधन प्राधकिरण, गरीनहाउस गैसैं, एरोसोल, आपदा जोखमि न्यूनीकरण के लयि सेंडाई फ्रेमवर्क, जलवायु परविरतन के लयि राष्टरीय कार्य योजना, प्रकृत-आधारति समाधान, पैसवि कूलगि टेक्नोलॉजी

मेन्स के लयि:

भारत में हीटवेव के लयि मानदंड, हीटवेव के प्रभावों को कम करने की रणनीतियैं

[सरोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यो?

भारत में हाल ही में उत्पन्न हुई गर्मी की समस्या ने हीटवेव को केवल प्राकृतिक आपदा को आपदा प्रबंधन (DM) अधनियम, 2005 के अंतरगत अधसूचति आपदाओं की सूची में जोड़ने से संबंधति बहस को फरि से जन्म दे दयिा है।

हीट वेव्स क्या हैं?

- परचिय:
 - हीटवेव भारत में गरीषम ऋतु के दौरान होने वाली असामान्य रूप से उच्च तापमान की अवधि है। हीटवेव आमतौर पर मार्च से जून के बीच चलती है और साथ ही कभी-कभी दुर्लभ मामलों में जुलाई तक चलती है।
- हीटवेव को परभाषति करने के लयि [IMD मानदंड](#):

मानदंड	वविरण
क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के आधार पर	<ul style="list-style-type: none"> ▪ अधिकितम तापमान: <ul style="list-style-type: none"> ◦ मैदानी क्षेत्रों में कम से कम 40°C या उससे अधिक। ◦ पहाड़ी क्षेत्रों में न्यूनतम तापमान 30°C या इससे अधिक। ◦ तटीय क्षेत्रों में 37°C या उससे अधिक।
सामान्य अधिकितम तापमान से वचिलन के आधार पर	<ul style="list-style-type: none"> ▪ जब कसिी स्थान का सामान्य अधिकितम तापमान 40°C से कम या उसके बराबर होता है: <ul style="list-style-type: none"> ◦ हीटवेव: सामान्य से 5°C से 6°C अधिक होता है। ◦ गंभीर हीटवेव: सामान्य से 7°C से ऊपर है। ▪ जब कसिी स्थान का सामान्य अधिकितम तापमान 40°C से अधिक हो: <ul style="list-style-type: none"> ◦ हीटवेव: सामान्य से 4°C से 5°C अधिक होता है ◦ गंभीर हीटवेव: सामान्य से वचिलन 6°C या उससे अधिक है
वास्तविक अधिकितम तापमान के आधार पर	<ul style="list-style-type: none"> ▪ हीटवेव: जब वास्तविक अधिकितम तापमान 45°C से ऊपर हो (47°C से ऊपर गंभीर हीटवेव)
घोषणा का मानदंड	<ul style="list-style-type: none"> ▪ मौसम वजिज्ञान उप-प्रभाग के अंतरगत कम-से-कम दो स्थानों में उपरोक्त शर्तें पूरी होनी चाहयि। ▪ ये स्थतियैं कम-से-कम लगातार दो दनियों तक बनी रहनी चाहयि।

हीटवेव के कारण क्या हैं?

- **गर्म और शुष्क वायु का प्रचलन:** गर्म और शुष्क वायु का एक बड़ा क्षेत्र गर्मी के रूप में कार्य करता है। फरि प्रचलति वायु इस गर्म वायु को अन्य क्षेत्रों में ले जाती है, जिससे तापमान में वृद्धि होती है।
- **नमी का अभाव:** वायु में नमी (Moisture) गर्मी को रोककर रखती है और उसे बाहर निकालने से रोकती है, जबकि शुष्क वायु सौर विकिरण को अधिक आसानी से सतह तक पहुँचने देती है तथा रात में न्यूनतम अवरोध के साथ वापस भेज देती है, जिसके परिणामस्वरूप दिन के तापमान में तेज़ी से वृद्धि होती है।
- **बादल रहति आसमान:** बादल एक ढाल की तरह काम करते हैं, जो सूर्य की रोशनी को वापस अंतरिक्ष में परावर्तित करते हैं और पृथ्वी की सतह को गर्म होने से रोकते हैं। साफ, बादल रहति आकाश अधिकतम सौर विकिरण को ज़मीन तक पहुँचने देता है, जिससे गर्मी बढ़ती है।
- **बड़े आयाम वाला प्रतचिक्रवाती प्रवाह:** प्रतचिक्रवात बड़े पैमाने पर वायुमंडलीय परसिंचरण प्रतरूप हैं, जिनमें वायु का अवतलन शामिल है।
 - यह अवतलति वायु रुद्धोष्म रूप से संपीडति होकर गर्म हो जाती है (बनि ऊष्मा प्राप्त कयि गर्म हो जाती है), जिससे सतह पर तापमान बढ़ जाता है।
- **भौगोलिक स्थिति:** उत्तर-पश्चिमी भारत जैसे शुष्क या अर्ध-शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में गर्मी की लहरें अधिक बार आती हैं। गर्मियों के महीनों के दौरान प्रचलति पश्चिमी वायुएँ गर्मी की लहरों को पूर्व और दक्षिण की ओर प्रवाहति होती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन:** ग्लोबल वार्मिंग के कारण गर्मी की लहरों की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है। बढ़ता आधारभूत तापमान इन घटनाओं के घटति होने के लिये अधिक अनुकूल वातावरण तैयार करता है।

हीटवेव के प्रभाव क्या हैं?

- **स्वास्थ्य पर:** गर्म लहरों के कारण नरिजलीकरण, तापजन्य ऐंठन (heat cramps), तापजन्य थकावट (heat exhaustion) और तापघात (heat stroke) हो सकता है।
 - लक्षणों में सूजन, बेहोशी, बुखार, थकान, कमज़ोरी, चक्कर आना और अत्यधिक पसीना आना शामिल हैं। हीट स्ट्रोक से शरीर का तापमान बढ़ सकता है, भ्रम, दौरे या कोमा हो सकता है और यह घातक भी हो सकता है।
 - राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2023 में गर्मी से संबंधित कारणों से 730 मौतें हुईं।
- **जल संसाधन पर प्रभाव:**
 - हीटवेव भारत में पानी की कमी के मुद्दों को बढ़ा सकती है, जल निकायों को सुखा सकती है, कृषि और घरेलू उपयोग के लिये पानी की उपलब्धता कम कर सकती है तथा जल संसाधनों हेतु प्रतसिपर्द्धा बढ़ा सकती है।
 - इससे जल को लेकर टकराव उत्पन्न हो सकता है, सचिाई के तरीके प्रभावति हो सकते हैं और पानी पर नरिभर उद्योगों पर असर पड़ सकता है।
 - उदाहरण: दक्षिणी राज्यों के अधिकांश प्रमुख जलाशय अपनी क्षमता के केवल 25% या उससे भी कम तक भरे हुए हैं।
- **ऊर्जा पर प्रभाव:**
 - हीटवेव कूलिंग उद्देश्यों के लिये बजिली की मांग को बढ़ा सकती है, जिससे पावर ग्रिड पर दबाव पड़ सकता है और संभावति ब्लैकआउट की स्थिति हो सकती है।
 - यह आर्थिक गतिविधियों को बाधति कर सकता है, उत्पादकता और उन कमज़ोर आबादी को प्रभावति कर सकता है, जिनके पास हीटवेव के दौरान बजिली तक पहुँच नहीं हो।
- **फसलें और पशुधन:** फसलें और पशुधन: ताप तनाव कृषिके लिये एक बड़ी समस्या है, जो फसलों तथा पशुधन दोनों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।
 - फसलों में, उच्च तापमान ऊर्जा के लिये सूर्य के प्रकाश का उपयोग करने की उनकी क्षमता में बाधा डालता है, जिससे वृद्धि और समग्र उपज कम हो जाती है।
 - पशुओं के लिये ताप तनाव वभिन्नि शारीरिक कार्यों और व्यवहारों को बाधति करता है, जिसकी गंभीरता पशु की नस्ल तथा पर्यावरण पर नरिभर करती है।
- **वनाग्न:** भारतीय वन सर्वेक्षण (Forest Survey of India- FSI) ने अनुमान लगाया है कविन के अंतरगत 21.4% क्षेत्र वनाग्निके प्रतसि संवेदनशील है।

हीटवेव के लिये NDMA दशा-नरिदेश:

- धूप में बाहर जाने से बचें, विशेषकर दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच।
- जतिना संभव हो सके, पर्याप्त मात्रा में पानी पियें।
- हल्के, हल्के रंग के, ढीले और छदिरयुक्त सूती कपड़े पहनें। धूप में बाहर जाते समय सुरक्षा चश्मा, छाता/टोपी, जूते या चप्पल पहनें।
- शराब, चाय, कॉफी और कारबोनेटेड शीतल पेय से बचें, जो शरीर से पानी को कम करते हैं।
- उच्च प्रोटीन वाले भोजन से बचें और बासी भोजन न खाएँ।
- ORS, घर में बने पेय पदार्थ जैसे लस्सी, तोरानी (चावल का पानी), नींबू पानी, छाछ आदि का प्रयोग करें जो शरीर को पुनः जलयुक्त बनाने में मदद करते हैं।
- पशुओं को छाया में रखें और उन्हें पीने के लिये पर्याप्त पानी दें।
- अपने घर को ठंडा रखें, पर्दे, शटर या सनशेड का प्रयोग करें और रात में खड़कियाँ खोलें।
- पंखे का प्रयोग करें, गीले कपड़े पहनें और बार-बार ठंडे पानी से नहाएँ।

अधिसूचि आपदा के रूप में ताप तरंगों से संबंधित आवश्यकताएँ और चुनौतियाँ क्या हैं?

■ अधिसूचि आपदाएँ:

- आपदा प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों से उत्पन्न होने वाली वनिशकारी घटना को कहते हैं। इस घटना के परिणामस्वरूप जान-माल की भारी हानि, संपत्ति की क्षति, पर्यावरण का क्षरण या इन सबका संयोजन होता है।
- अधिसूचि आपदा वह होती है जिससे सरकार द्वारा अधिकारिक रूप से मान्यता दी गई हो तथा जिससे सामान्यतः **आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005** जैसे कानूनी ढाँचे में परिभाषित किया गया हो।
 - वर्तमान में इस अधिनियम के अंतर्गत **आपदाओं की 12 श्रेणियाँ अधिसूचि हैं।** इनमें **चक्रवात, सूखा, भूकंप, आग, बाढ़, सुनामी, ओलावृष्टि, भूस्खलन, हमिस्खलन, बादल फटना, कीट हमला,** तथा **पाला और शीत लहरें** शामिल हैं।
- वित्तीय सहायता: अधिसूचि आपदा घोषित होने से प्रभावित क्षेत्र आपदा प्रबंधन अधिनियम के तहत स्थापित दो नधियों, राष्ट्रीय स्तर पर **राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष** (National Disaster Response Fund- NDRF) और राज्य स्तर पर **राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष** (State Disaster Response Fund- SDRF) से वित्तीय सहायता के लिये पात्र हो जाता है।

■ DM अधिनियम में हीटवेव्स को जोड़ने की चुनौती:

- वित्त आयोग की अनिच्छा: वित्त आयोग हीटवेव को अधिसूचि आपदा के रूप में शामिल करने के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त नहीं है।
 - **15वें वित्त आयोग** ने राज्यों को SDRF नधि का 10% तक "**स्थानीय आपदाओं**" जैसे बजिली गरिने या लू लगने के लिये उपयोग करने की अनुमति दी है, जिसकी अधिसूचना राज्य स्वयं दे सकते हैं।
- विशाल वित्तीय नहितार्थ: सरकार को अधिसूचि आपदा के कारण होने वाली हर जान के लिये मौद्रिक मुआवजा (4 लाख रुपए) देना होगा। गर्मी से संबंधित मौतों की बड़ी संख्या को देखते हुए यह एक बहुत बड़ा बोझ हो सकता है।
- मृत्यु का अनुमान: अधिकतर मामलों में, गर्मी प्रत्यक्ष रूप से लोगों की मृत्यु का कारण नहीं बनती। उनकी मृत्यु पहले से मौजूद दूसरी बीमारियों के कारण होती है जो अत्यधिक गर्मी के कारण और भी बदतर हो जाती हैं, जिससे मृत्यु के सटीक कारण का पता लगाना मुश्किल हो जाता है।
- आपदा नधि की संभावित समाप्ति: यद्यपि SDRF और NDRF के लिये वित्तीय आवंटन पर्याप्त है कति यद हीटवेव तथा तड़िति (Lightning) जैसी अन्य स्थानीय आपदाओं को अधिसूचि सूची में जोड़ दिया जाए तो यह अपर्याप्त हो सकता है।

■ हीटवेव को प्राकृतिक आपदा के रूप में अधिसूचि करने की आवश्यकता:

- संसाधन का बेहतर आवंटन: हीटवेव की अधिसूचि करने से शमन रणनीतियों, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों और बेहतर स्वास्थ्य सेवा तैयारियों के लिये समर्पित नधि तथा संसाधन उपलब्ध होंगे।
- प्रभावी कार्य योजनाएँ: यह राज्यों को हीटवेव के लिये व्यापक एक्शन प्लान विकसित करने के लिये प्रोत्साहित करेगा जिसमें जन जागरूकता, शीतलन केंद्र और सुभेद्य वर्ग की सहायता के लिये स्पष्ट प्रोटोकॉल की रूपरेखा होगी।
- बढ़ती तीव्रता और आवृत्ति: हीटवेव की स्थिति आम और गंभीर होती जा रही है। IMD की रिपोर्ट के अनुसार समग्र देश में "हीटवेव डेज़" में वृद्धि हुई है। 23 ऐसे राज्य हैं जो हीटवेव के प्रतिसुभेद्य हैं।

हीट एक्शन प्लान क्या है?

- **हीट एक्शन प्लान (HAP)** सरकारों या संगठनों द्वारा विकसित एक व्यापक रणनीति है जिसका उद्देश्य अत्यधिक गर्मी से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को कम करना है।
 - इसमें सुभेद्य वर्ग की रक्षा करना, सूचना और संसाधन उपलब्ध कराना तथा हीटवेव के दौरान प्रतिक्रियाओं का समन्वय करने के उपाय शामिल हैं।
- ये मानव हताहतों को कम करने के लिये अलर्ट और अंतर-विभागीय समन्वय सहित **अल्पकालिक उपायों** की रूपरेखा तैयार करते हैं। HAP में डेटा विश्लेषण के आधार पर भविष्य की हीटवेव का सामना करने के लिये तत्पर रहने के लिये शीतल छतों और अधिक वनस्पति जैसे बुनियादी ढाँचे के उन्नयन जैसी दीर्घकालिक रणनीतियाँ शामिल हैं।
- ओडिशा में वर्ष 1998 में हीटवेव के कारण 2,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई जिसके बाद राज्य ने वर्ष 1999 में पहली बार हीट एक्शन प्लान विकसित किया। इसके बाद वर्ष 2010 में भीषण हीटवेव की घटना के बाद वर्ष 2013 में अहमदाबाद द्वारा पहली शहर-स्तरीय एक्शन प्लान विकसित किया गया।
- NDMA और IMD HAP के विकास के लिये 23 राज्यों के साथ कार्य कर रहे हैं। HAP पर कोई केंद्रीकृत डाटाबेस उपलब्ध नहीं है कति राज्य और शहर स्तर पर लगभग 23 HAP मौजूद हैं तथा ओडिशा तथा महाराष्ट्र जैसे कुछ राज्यों ने ज़िला स्तर पर HAP तैयार किये हैं।

दृष्टिभेन्स प्रश्न:

प्रश्न: ऋषण तरंगों की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के उत्तरदायी कारकों तथा उनके प्रभाव को कम करने के लिये राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर किये जा सकने वाले उपायों पर चर्चा कीजिये।

??????????:

प्रश्न. वर्तमान में और नकट भविष्य में भारत की ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में संभावित सीमाएँ क्या हैं? (2010)

1. उपयुक्त वैकल्पिक प्रौद्योगिकियाँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
2. भारत अनुसंधान एवं विकास में अधिक धन का निवेश नहीं कर सकता है।
3. भारत में अनेक विकसित देशों ने पहले ही प्रदूषण फैलाने वाले उद्योग स्थापित कर लिये हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

??????????:

प्रश्न. संसार के शहरी निवास-स्थानों में ताप द्वीपों के बनने के कारण बताइये। (2013)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/heatwaves-as-a-notified-disaster>

